ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष - ६ | अंक-२ | मासिक-हिन्दी | दिसम्बर-२०१६ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ- ४४

बलिदान दिवस पर पुण्यात्मा को शत-शत नमन्

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर आहूत अमर बलिदानी ठाकुर रोशनसिंह

एक बार नहीं, बार-बार पढ़ें...

आओ! तुम्हें स्वर्ग-नरक से अवगत करवायें

इस अंक में

विश्वगुरु की दयनीय दशा क्यों? सम्पादकीय

हमारी महान विभूतियां... ऐसे भी सीखो सिखाओ हमारी देववाणी...

विद्या प्राप्ति जीवन का मुख्य कर्म यम-नियम निभाओ सभी..

वह परमेश्वर है कहां नहीं ये कहां आ गए हम?

वर्णाश्रम व्यवस्था समाज व राष्ट्र के लिए हितकर

मैं हिन्दू नहीं आर्य समाजी हूं मैकाले द्वारा तैयार की हुई आज की शिक्षा

व्यवस्था परिवर्तन के लिए एक और क्रान्ति... इतिहास से अनभिज्ञ विश्वकर्मावंशी

... और भी बहुत कुछ

मन्चस्थ विद्वतगण एवं म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री प्रकाश जी आर्य उद्बोधन देते हुए।

मध्यप्रदेश शासन के जेल मन्त्री श्री सूर्यप्रकाश जी मीणा उद्बोधन देते हुए।

स्वतन्त्रता संग्राम की नींव व आर्य समाज पुस्तक का विमोचन गणमान्य विद्वतगणों एवं अतिथियों द्वारा।

पं. नरेशदत्त जी आर्य, बिजनौर का आत्मीय अभिनन्दन गुरुकुल परिवार की ओर से।

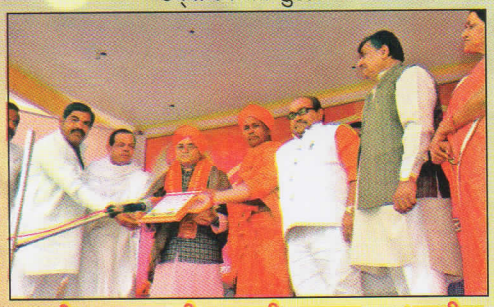

स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, पलवल का भावभीना सम्मान स्वामी ऋतस्पति जी व आचार्य सत्यसिंधु जी द्वारा।

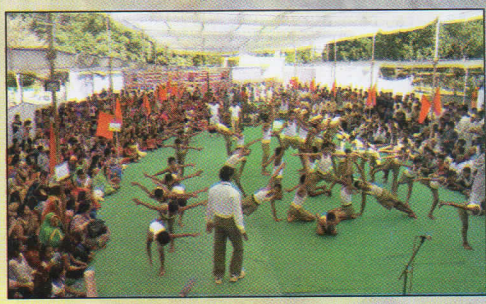

गुरुकुल ब्रह्मचारियों द्वारा विहंगम् शौर्य प्रदर्शन।

दोनों भाई एवं दोनों बहिनें परिणय सूत्र में बन्धे

श्री गोपाल जी जांगिड सुपुत्र श्री गिरधारीलाल जी जांगिड (गेपाल) निवासी-भुसावल (महाराष्ट्र) मूल निवासी-अमरपुरा (डिड़वाना), जिला- नागौर (राज.) के ज्येष्ठ सुपुत्र **चि. राजेश का शुभ विवाह सौ.का. रजनी** सुपुत्री स्मृति शेष **महेश कुमार जी शर्मा, सुपुत्र श्री प्रहलादराय जी शर्मा** निवासी-जलगांव (महाराष्ट्र) मूल निवासी-चन्दाका की ढाणी, जिला- झुन्झनू (राज.) के संग तथा चि. राजेश के छोटे भ्राता **चि. जगदीश का शुभ विवाह** रजनी की छोटी बहन **सौ.का. ममता के संग दिनांक ३० नवम्बर २०१६** को होटल प्रीतम पार्क, जलगांव में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दोनों नवदम्पतियों का **आशीर्वाद समारोह १ दिसम्बर** को भुसावल नगर में सम्पन्न हुआ। जिसमें परिवारजनों, स्नेहीजनों तथा गणमान्यजनों ने उपस्थित होकर नवदम्पतियों को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर **वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा** भी उपस्थित रहे।इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से **वैदिक संसार को ५१०० रु. का सात्विक दान** दिया गया।

राजेश संग रेखा

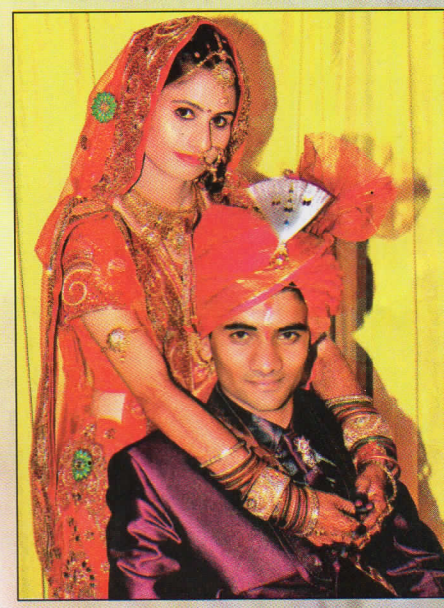

भारती संग जगदीश

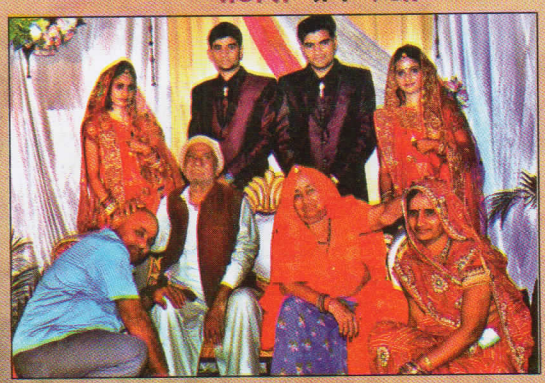

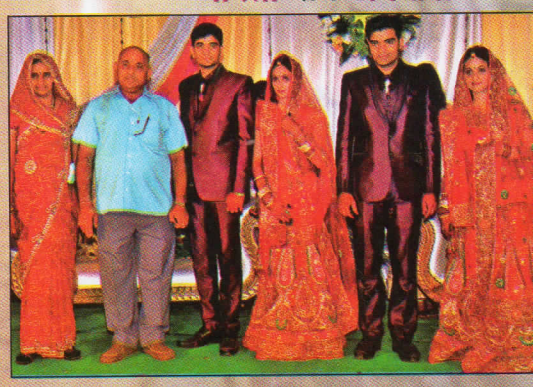

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-६, अंक-२
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन् आंग्ल दिनांक : २५ दिसम्बर, २०१६
आर्ष तिथि-पौष मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११८
कलि संवत्- ५,११८
विक्रम संवत्- २०७३, दयानन्दाब्द-१९३

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन् स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्रमांक- ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
विश्वगुरु की इतनी दयनीय दशा क्यो?	सम्पादकीय	०५
हमारी महान विभूतियां- ऊद्ध सदमा	शिवनारायण उपाध्याय	०७
-सत्यकाम जाबाल	मृदुला अग्रवाल	०९
-स्वामी दयानन्द सर.	आ. रामज्ञानी आर्य	०९
-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	राधेमोहन	१०
-ठा. रोशनसिंह	डोंगरलाल वर्मा	११
ऐसे भी सीखो-सिखाओ हमारी देववाणी...	डोंगरलाल वर्मा	१३
चार मुक्तक	महात्मा चैतन्यमुनि	१३
विद्या प्राप्ति जीवन का मुख्य कर्म	शिवनारायण उपाध्याय	१४
भारत के नर-नारी जागो	पं. नन्दलाल निर्भय	१७
यम-नियम निभाओ सभी	देशराज आर्य	१७
गुरुकुल कांगड़ी का अद्भुत समय	रामफलसिंह आर्य	१८
भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	बाबूलाल जोशी	२१
प्रेरणास्पद व्यक्ति हजारीलाल सोलंकी	वैदिक संसार	२२
शचीवृती सन्तान	देवनारायण भारद्वाज	२२
शिक्षा	ओमप्रकाश बजाज	२२
वह परमेश्वर है कहां नहीं	राम आर्य 'व्यथित'	२३
वर्णाश्रम व्यवस्था समाज व राष्ट्र के लिए...	खुशहालचन्द्र आर्य	२३
ये कहां आ गये हम?	राजेन्द्रप्रसाद आर्य	२५
मैं हिन्दू नहीं आर्य समाजी हूं	नरेन्द्र ब्रह्म	२६
मैकाले द्वारा तैयार की हुई आज की शिक्षा...	स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती	२९
शासन व्यवस्था कैसी हो?	नरसिंह सोनी	२८
व्यवस्था परिवर्तन के लिए एक और क्रान्ति...	डॉ. लक्ष्मीनिधि	२९
शिल्पियों के छात्रावास एवं विश्वकर्मा मन्दिर	ताराचन्द जांगिड	३०
इतिहास से अनभिज्ञ विश्वकर्मावंशी पल...	स्व. सुखदेव शर्मा	३१
मृत्यु पर विजय	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	३३
आओ! तुम्हें स्वर्ग-नरक की वास्तविकता...	स्व. सुखदेव शर्मा	३४
ऋषि मिशन का क्रान्तिकारी अभियान	ऋषि मिशन	३५
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३६
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३८
पाठक पंचायत	आपके पत्र	४१
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम्।। ऋ. १.६.४

भावार्थ -जो जल सूर्य्य वा अग्नि के संयोग से छोटा-छोटा हो जाता है, उसको धारण कर और मेघ के आकार का बना के वायु ही उसे फिर-फिर वर्षाता है, उसी से सबका पालन और सबको सुख होता है।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के जनवरी २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

११ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल तृतीया	१जनवरी सत्येन्द्रनाथ बोस ज. डॉ. एस.एस. भटनानगर पुण्यतिथि
१३ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल पंचमी	३ जनवरी महिला शिक्षा को समर्पित सावित्रीबाई फुले जयन्ती
१६ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल अष्टमी	६ जनवरी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुण्यतिथि
१७ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल नवमी	७ जनवरी प्रवासी भारतीय दिवस
१८ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल दशमी	८ जनवरी क्षय तिथि (जया) एकादशी-२९:०५, भरणी-२७:५८
२० गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल त्रयोदशी	१० जनवरी मृगशिरा-२६:४०, प्रदोष
२१ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ शुक्ल चतुर्दशी	११ जनवरी लाल बहादुर शास्त्री पुण्यतिथि
२३ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण प्रतिपदा	१३ जनवरी पुष्य-२९:१०
२४ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण द्वितीया	१४ जनवरी जयशंकर प्रसाद पुण्यतिथि
२५ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण तृतीया	१५ जनवरी मघा-३०:१४, थल सेना दिवस
२६ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण चतुर्थी	१६ जनवरी गुरु हरराय जयन्ती
२९ गते	तपस् मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण सप्तमी	१९ जनवरी चित्रा-१६:३५, कुम्भ संक्रान्ति २४:५४
०२ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण दशमी	२२ जनवरी स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, शहीद रोशनसिंह ज.
०३ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण एकादशी	२३ जनवरी विजया एकादशी, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
०४ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण द्वादशी	२४ जनवरी डॉ. एच.जे. भाभा पुण्यतिथि
०५ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण त्रयोदशी	२५ जनवरी पूर्वाषाढ़- २८:५२, प्रदोष, हेमाद्रि
०६ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	माघ कृष्ण चतुर्दशी	२६ जनवरी गणतन्त्र दिवस
०८ गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	२८ जनवरी लाला लाजपतराय जयन्ती
१० गते	तपस्य मास	१९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल तृतीया	३० जनवरी शहीद दिवस, जयशंकर प्रसाद जयन्ती, महात्मा गान्धी पु.ति.

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

शिल्पियों के छात्रावास व विश्वकर्मा मन्दिर

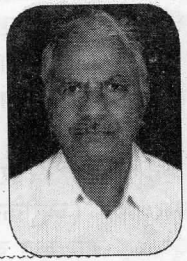

- ताराचन्द जांगिड -
२३-बी, सुभाष नगर पाल रोड जोधपुर
चलभाष- ९७७२२१३०२

जन्मना जातिवाद से शोषित- पीड़ित, ज्ञान-विज्ञान तथा चारित्रिक व्यवहार के धनी विश्वकर्मा परिवारों में जैसे-जैसे लोग शिक्षित हुए और धन्धे व व्यापार में पैसा कमाने लगे तो उन्हें महसूस होने लगा कि समाज की भावी पीढ़ी को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए शिक्षा की व्यवस्था जरूरी है। इस दृष्टिकोण से हमारे पूर्वजों ने बड़े-बड़े शहरों तथा कस्बों में छात्रावास बनाये और उसमें विश्वकर्मा भगवान के मंदिर भी स्थापित कर दिए। छात्रावासों में पढ़कर समाज के कई छात्र इंजीनियर, डॉक्टर, उद्योगपति और बड़े व्यवसायी बने, लेकिन मन्दिर की पूजा अर्चना के लिए धर्म-संस्कृति तथा वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से विहिन जन्मना ब्राह्मणों को नियुक्त कर दिया। पहले अकेला पुजारी होता था जो कि सुबह-शाम मन्दिर की पूजा व्यवस्था कर लेता और छात्रावास में छात्र अपनी पढ़ाई करते रहते।

कालान्तर में विश्वकर्मा परिवारों से इतर जन्मना जाति व्यवस्था से उत्पन्न दूसरे समाज के पुजारी कई जगहों पर सपरिवार छात्रावासों एवं मन्दिरों में रहने लगे और अपनी राजनैतिक चालबाजी से अपना कब्जा छात्रावासों एवं मन्दिरों पर करने लगे। विश्वकर्मा परिवारों में व्याप्त गुटबाजी और सामाजिक चेतना के अभाव में छात्रावासों में छात्रों की संख्या सिमटती गई। इस तरह धर्म के नाम पर छात्रावासों का दुरुपयोग होने लगा।

राजस्थान में ही एक शहर का हाल बतावें कि छात्रावास में बरसों पहले एक विश्वकर्मा मन्दिर समाज ने बना दिया और उसमें दूसरे समाज वाले साधु को पूजा अर्चना के लिए नियुक्त कर दिया। उस साधु ने अपने धर्म-धन्धे के विस्तार के लिए मोहल्ले के दूसरे समाज वालों को भी मन्दिर में आने-जाने की इजाजत दे दी और जांगिड समाज के छात्रावास की गतिविधियां एक तरफ सिमट कर रह गई। उस साधु की मृत्यु के बाद दूसरे साधु ने कब्जा कर दिया। जांगिड समाज ने काफी बरसों तक उस साधु के खिलाफ कोर्ट में केस किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। कोर्ट ने जांगिड समाज को स्टे दे रखा है, जिससे पुजारी बाउण्ड्री पर लगी छीणों को हटा कर बाउण्ड्री भी ढंग की नहीं बना सके। छात्रावास के कमरे क्षतिग्रस्त हो चुके हैं और साधु ने एक ट्रस्ट निर्माण कर जांगिड छात्रावास के गेट के ऊपर अपने ट्रस्ट के बोर्ड लटका दिया है और जांगिड समाज सिर्फ मूक दर्शक बन कर रह गया है। ऐसे मामले राजस्थान में चार-पांच जगह हो चुके हैं।

अतः भविष्य में जहां भी छात्रावास का जांगिड समाज निर्माण करावे वहां साथ में विश्वकर्मा मन्दिर की स्थापना न करे। छात्रावास सिर्फ विद्यार्थियों के रहने तथा पढ़ने तक सीमित हो। एक दीवार में अलमारी का निर्माण कर चाहे तो विश्वकर्मा भगवान की तस्वीर रख सकते हैं, जिसकी पूजा अर्चना सिर्फ छात्रावास के विद्यार्थियों के ही जिम्मे हो।

यह खुशी की बात है कि राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके बाडमेर शहर में जांगिड समाज ने एक विशाल छात्रावास का निर्माण किया है। उसमें बाहर की तरफ रोड की तरफ दुकानें बना दी हैं जिससे किराये के रूप में छात्रावास (संस्था) को वित्तीय मदद मिलती है। छात्रों के रहने-खाने-पीने की उत्तम व्यवस्था है ओर वहां के शिक्षाविद् तथा सामाजिक कार्यकर्ता छात्रावास संचालक मंडल के सदस्य हैं इस उत्तम व्यवस्था के लिए बाड़मेर जांगिड समाज धन्यवाद का पात्र है। अतः समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों, समाज सेवी, कानून के विशेषज्ञ अधिवक्ताओं से मेरा निवेदन है कि जहां भी आपके क्षेत्र में छात्रावासों में निर्मित मन्दिरों में जन्मना जाति व्यवस्था के वेद शास्त्रों के ज्ञानविहीन पुजारी या साधु-सन्तों ने कब्जा कर रखा है, उन्हें हटाने में पूरा समाज एक जुट होकर कार्यवाही करें और उन बीमार छात्रावास संस्थाओं को रोग मुक्त करें तो यह वर्तमान पीढ़ी की मेहनत भविष्य की पीढ़ी को नया जीवन प्रदान करेगी। **जय श्री विश्वकर्मा**

प्रतिक्रिया

इतिहास से अनभिज्ञ विश्वकर्मावंशी पल-प्रतिपल लूटा खसोटा जा रहा

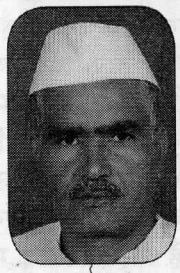

- स्वर्गीय सुखदेव शर्मा-
प्रकाशक- वैदिक संसार
इंदौर (म.प्र.)
चलभाष-९४२५०६९४९१

परमपिता परमेश्वर की न्यायकारी व्यवस्थानुसार प्रारब्ध के उत्कृष्ट कर्मों के फलानुसार मानव योनि, उच्च कुल तथा ज्ञान-विज्ञान के धनी एवं शुद्ध सात्विक खान-पान, चारित्रिक व्यवहार के धनी माता-पिता से अनुवांशिक गुणों की धरोहर के वीरासत के रूप में लेकर विश्वकर्मा कुल वंश में जन्मा बालक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रखर बुद्धि का धनी तो होता ही है। ऐसे बालक को वेदादि शास्त्रों का ज्ञान अगर प्राप्त हो जाए तो वह संसार के किसी व्यक्ति से कभी पीछे नहीं रह सकता और ऐसा व्यक्ति ही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है। अपितु ज्ञान-विज्ञान दोनों क्षेत्र में पूर्ण अधिकार रखने के कारण वह **'सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण'** है। ऐसे ही किन्हीं कारणों से जन्मना जाति व्यवस्था के नाम पर वैदिक ज्ञान की घुट्टी नहीं मिलने, लार्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा का क,ख,ग, भी नहीं जानने के उपरान्त भी विश्वकर्मा कुल परिवार में जन्मा व्यक्ति वर्तमान में बगैर डिग्री के इंजीनियर के गौरव को प्राप्त करता है।

ऐसे ज्ञान-विज्ञान के धनी, उच्च कुल परिवार में जन्में व्यक्ति को कतिपय धूर्त वर्ग द्वारा जो वेदज्ञान परमपिता परमात्मा के द्वारा सर्वमानवों के सर्वहितों के लिये दिया गया तथा उस वेदज्ञान आधारित धर्म पर एकाधिकार जमा अपने शूद्र स्वार्थों के पूर्ति हेतु वेदज्ञान व वेदादि शास्त्रों पर आधारित धर्म को तोड़-मरोड़कर अपने अनुकूल निर्माण कर जन्मना जाति व्यवस्था के द्वारा **'सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण'** पद के अधिकारी को वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से विभूषित करने के स्थान पर उसे पदच्यूत कर शूद्र (अज्ञानी) का स्थायी पट्टा दे दिया तथा कालान्तर में उसे अछूत की श्रेणी में खड़ा कर उसका दोहन, शोषण तथा उत्पीड़न किया गया तो बताओ कैसे होता राष्ट्र का उत्थान?

जन्मना जाति व्यवस्थानुसार औदिच्च (तिवारी) ब्राह्मण कुल परिवार में पराधीनता के काल में जन्मी दिव्यात्मा जिसका सांसारिक, शारीरिक तथा पारिवारिक नाम मूलशंकर था जो आगे चलकर भारतीय प्रभा मण्डल के दैदीप्यमान नक्षत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती नाम से प्रख्यात हुई। आपने धर्म क्षेत्र के आडम्बरों को नकारते हुए सत्य की प्राप्ति हेतु अपना जीवन होम कर दिया। आपने जाना कि **'सर्व सुखस्य धर्म मूलम'** अर्थात् सब सुखों का मूल धर्म है और **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** अर्थात् धर्म का मूल वेद है। साथ ही आपने जाना कि विश्वगुरु की उपाधी को प्राप्त यह स्वर्णभूमि ही सच्चा पारस मणि है तथा यह अगर पराधीनता के दारुण दु:ख को भोग रही हैं तो उसका कारण मानव-मानव में भेद करने वाली छुआ-छूत परक जन्मना जाति वाद, मानव निर्माण की जननी मातृशक्तियों का शोषण-उत्पीड़न आदि-आदि है और इन सबके मूल में वेद ज्ञान से विमुख होना है। इसी कारण उन्होंने सन्देश दिया **'आओ वेदों की ओर लौट चलें'**।

आपने अपने रचयित अमर ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, तथा पूना प्रवास के दौरान दिये गये प्रवचनों में शिल्पविद्या की महत्ता की स्थान-स्थान पर विवेचना की है तथा यहां तक कहा है कि शिल्पविद्या का पतन नहीं होना तो यूरोपीय अभिमान में नहीं चढ़ जाते आपने शिल्पकर्म को प्राणी मात्र हितकारी, परोपकारी यज्ञ कर्म की संज्ञा से विभूषित किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर डॉ. इन्द्रमणि शर्मा जो लखनऊ के आर्य समाज गणेशगंज के प्रधान रहे हैं के द्वारा विश्वकर्मा कुलवंशीय परिवारों को वैदिक सिद्धान्तों से समृद्ध करने के उद्देश्य से विश्वकर्मा परिवारों के सक्षम, बुद्धिजीवियों को साथ लेकर १९०७ में **'जांगिड जोग मैथिल सभा'** को अजमेर में जन्म दिया, जिसके प्रारम्भिक दस नियम आर्य समाज के नियम थे तथा इस सभा का मूल उद्देश्य समाज परिवारों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना था। इस सभा के द्वारा वर्ष १९०८ में प्रकाशित **'जांगिड समाचार'** के मुख पृष्ठ पर वेद मन्त्र और उसकी व्याख्या प्रमुखता से प्रकाशित होती थी। इस सभा के बैनर तले जांगिड वैदिक संस्कृत विद्यालय की स्थापना सम्भवत: १९३८ में फतेहपुर शेखावटी जिला सीकर (राज.) में की गई। (जहां पर भी वैदिक ज्ञान, संस्कृति को तिलांजलि देकर विश्वकर्मा मन्दिर निर्माण के प्रयास किये जा रहे हैं।) वर्तमान में सम्पूर्ण भारत भर में स्थान-स्थान पर बहुतायत में विश्वकर्मा कुल के जो परिवार वैदिक सिद्धान्तों अथवा आर्य समाजी मिलते हैं उसका श्रेय इस सभा तथा इसकी प्रेरणा से स्थापित अन्य सभाओं तथा आर्य समाज को जाता है। इसी सभा का वर्तमान नाम अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली है। अत्यन्त शोभ का विषय है कि विश्वकर्मा वंशियों को अज्ञानता, दोहन, शोषण, उत्पीड़न के गहन दल-दल से निकालकर उन्हें शूद्र वर्ण से पीछा छुड़ाकर ब्राह्मण (ज्ञानी) पद पर विराजमान करने वाली विभूति महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा दिखाये गये वेदमार्ग को तिलांजलि देकर **'दो कदम आगे बढ़कर भी विश्वकर्मावंशी चार कदम पीछे (पतन) की ओर जा रहे'** को चरितार्थ कर रहा विश्वकर्मा परिवार पल-प्रतिपल धर्म-ईश्वर के नाम पर अन्धविश्वास-पाखण्ड का शिकार होकर लूटा-खसोटा जा रहा है। समाज के शैक्षणिक एवं संगठनात्मक विकास की दिशा में इसने धर्मशालाओं, छात्रावासों का निर्माण किया और वेदज्ञान से विमुख होने के कारण उन धर्मशालाओं में विश्वकर्मा मन्दिरों का निर्माण कर वेदज्ञान से विमुख जन्मना जाति व्यवस्था से उपजे अन्धविश्वास-पाखण्ड की विषबेल को सींचने वाले तथाकथित नामधारी ब्राह्मणों जिन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अगर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में **'पोप'** नाम दिया है। जिनके धूर्तजाल से महर्षि दयानन्द

सरस्वती ने उबारा था। पुनः उन पोपों के जाल में जकड़ उनको वहां पूजा-अर्चना का अधिकार सौंप '**आ बैल मुझे मार**' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा है। अत्यन्त विडम्बना का विषय है कि विश्वकर्मावंशी एक तरफ तो स्वयं को ब्राह्मण कहता है और दूसरी ओर अपने से ज्ञान-विज्ञान में निम्न परिश्रम आदि से दूर, उदर पूर्ति हेतु भी परआश्रित, दुर्व्यसनी, व्यभिचारियों को ब्राह्मण देवता का सम्मान प्रदान कर उनके पाँव छूता है और उनकी वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध कुशिक्षाओं को '**बाबा वाक्यं प्रमाणं**' मानकर अपने परिश्रम से अर्जित धन को व्यर्थ लूटा रहा है और वेद विरुद्ध मार्ग पर चलकर धर्म, संस्कृति, राष्ट्रीय मूल्यों को हानि पहुंचाने के पाप का भागी बन रहा है।

जोधपुर निवासी श्री ताराचन्द जी जांगिड से.नि. अधिशाषी अभियन्ता द्वारा उपरोक्त चिन्तनीय वेदना एक-दो छात्रावासों की व्यक्त की है। मेरे द्वारा जीवन का अधिकांश भाग समाज सेवा को अर्पित करते हुए देश के अनेक स्थान पर यही हाल देखा है, समाज के पूर्वजों द्वारा कठिन प्रयासों से बनवाये गए मन्दिरों, धर्मशालाओं, छात्रावासों को धूर्त-मक्कार, लोगों द्वारा अतिक्रमित कर लिया गया है या अतिक्रमित किये जाने के कगार पर हैं, इसके उपरान्त भी वेदज्ञान से विमुख मूक-बधिर, विवेकशील-परिश्रमी समाज अपने विवेक और परिश्रम से अर्जित धन का सदुपयोग नहीं कर रहा है। जांगिड कुल गौरव भामाशाह श्री नेमीचन्द जी जांगिड गान्धीधाम द्वारा जब अपने पैतृक निवास ग्राम लाड़पुरा में शिव मन्दिर का निर्माण कर प्राण-प्रतिष्ठा की गई थी तब उन्हें मेरे द्वारा इस विषय में चेताया गया था, तब उन्होंने भी इसे स्वीकार करते हुए भविष्य में मन्दिरों पर व्यय नहीं करने का आश्वासन दिया था। बरनेला चेरीटेबल ट्रस्ट के द्वारा जोधपुर में डांगियावास ग्राम में पंचमुखी विश्वकर्मा का विशालकाय मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा १७ सितम्बर २०१७ को किया जाना प्रस्तावित है के प्रमुख श्री पुनारामजी बरनेला से जोधपुर प्रवास के समय मेरी भेंट हुई उन्हें मैंने पूर्व में सत्यार्थ प्रकाश दिया था। उनसे परमात्मा के निराकार स्वरूप के विषय में चर्चा की तथा सन्देह जताया कि आपने अभी तक सत्यार्थ प्रकाश नहीं पढ़ा है तथा उनसे यह भी कहा कि आपके कार्यालय में आपको सम्मानित करते हुए आर्य समाज द्वारा दिया गया स्मृति चिन्ह रखा है इसमें महर्षि दयानन्द का चित्र है विश्वकर्मा परिवार को यहां तक पहुंचाने में इनके योगदान को जानों और मानो आदि-आदि गहन चर्चा हुई। लगभग दो वर्ष पूर्व जांगिड ब्राह्मण छात्रावास सीकर के प्रबन्धक श्री नरेन्द्र जी शर्मा से विस्तृत चर्चा हुई कि छात्रावास के आवासिय छात्रों को वैदिक ज्ञान संस्कृति से जोड़ने हेतु शिविर-सत्संग आदि के आयोजन किये जाएं, किन्तु व्यवस्थापकों की शूद्र राजनीति तथा हठ-दुराग्रह आदि कुटिल भावनाओं के चलते प्रगति नहीं हो सकी।

वैदिक संसार द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं कि विश्वकर्मावंशी परिवार अपने अतीत को जाने और उससे शिक्षा प्राप्त कर वेद मार्ग के पथिक बने। विश्वकर्मा के वास्तविक स्वरूप को जाने। सम्पूर्ण कार्यों को करने की क्षमताधारी होने और कार्यों को करने के कारण सर्वप्रथम अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान, उस परमात्मा का गौणिक नाम विश्वकर्मा है। जो एकदेशिय नहीं होकर सर्वव्यापक अर्थात् कण-कण में समाया हुआ है वह चर्मचक्षु से देखा जाने वाला नहीं होकर ज्ञानचक्षु से अनुभूत किया जाने वाला है। पश्चात् ज्ञान-विज्ञान के धनी देहधारी ऋषि विश्वकर्मा हुए हैं, जिन्होंने अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद की रचना की है, जिसे शिल्पशास्त्र भी कहा जाता है, इसके पश्चात अनेक विश्वकर्मा हुए हैं, जैसे व्यास, एक उपाधी के रूप में प्रचलित है उसी प्रकार विश्वकर्मा भी एक उपाधी है जो ज्ञान-विज्ञान का धनी है वह विश्वकर्मा है। इसका यह मतलब नहीं है कि वह परमात्मा हो गया। ऐसा समझना घोर अज्ञानता है निराकार परमपिता परमात्मा और जन्म-मृत्यु के बन्धन में जकड़े तनधारी मनुष्य में अनेक भेद हैं, इन्हें जानना और मानना चाहिए। विश्वकर्मा नामधारी जो अनेक मनुष्य भी कालान्तर में उत्पन्न हुए हैं उनके शरीरों की भी सामान्य मनुष्यों की तरह रचना थी कोई दो-पांच सिर वाले अथवा १०-२० हाथ वाले वे नहीं थे। मनुष्य जिस प्रकार से आदिकाल से उत्पन्न होता आ रहा है वैसा ही आज भी हो रहा है और कल भी होगा। ये महान आत्माएँ वेदादि शास्त्रों की ज्ञाता होकर बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं, चित्रकार अथवा मूर्तिकार ने इनकी बहुमुखी प्रतिभा को अनेक मुंह बनाकर प्रदर्शित किया है। इसका आशय यह नहीं है कि ये बहुमुख वाले थे। मुख का आशय ज्ञान से है जिस व्यक्ति में एक व्यक्ति की क्षमता से अधिक असामान्य ज्ञान हो वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी है तथा इनके चित्र अथवा मूर्ति की पूजा से समाज का कल्याण नहीं होने वाला वास्तविक कल्याण इनके चरित्र को आत्मसात कर ये जिस वेदादि शास्त्रों के मार्ग पर चलते थे उसी पथ के अनुगामी बनने से ही मानव मात्र का भला होगा।

आओ ऋषि दयानन्द के दिखाये गए मार्ग '**वेदों की ओर लौटो**' पर चल कर सर्व सुखों की प्राप्ति करें और जगत् के कल्याण के निमित्तकर्ता वास्तविक विश्वकर्मा बनें। इसके लिए विश्वकर्मा परिवारों को अपने बच्चों को गुरुकुलों में शिक्षादि के लिए भेजना चाहिए तथा छात्रावासों, धर्मशालाओं, विश्वकर्मा मन्दिरों में यज्ञशालाओं का निर्माण कर वहां वैदिक गुरुकुलों से निकले स्नातकों को धर्मोपदेशकों को नियुक्त कर दैनिक अग्निहोत्र, धर्मोपदेश की व्यवस्था की जाना चाहिए तथा समय-समय पर युवाओं के लिए चरित्र निर्माण शिविर तथा क्रियात्मक योगाभ्यास शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए, क्योंकि वर्तमान समय में हम बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति आदि-आदि तो बना रहे हैं, किन्तु वे मानव नहीं बन पा रहे हैं। ऐसा अगर हम कर पाते है तो समाज रूपी जीर्ण-शीर्ण इमारत को मजबूत बनाया जा सकेगा अन्यथा हम चाहे जितने विशालकाय मन्दिर बना लेवें। हमारा कल्याण नहीं होने वाला उल्टे हम पतन के गर्त में गिरते रहेंगे। किसी ज्ञानी ने कहा है जो समाज, राष्ट्र अपने इतिहास से शिक्षा नहीं लेता उसे पतन से कोई नहीं बचा सकता। ●

आशा-अपेक्षा के साथ अनन्त शुभकामनाएँ-

विशेष टिप्पणी- महर्षि दयानन्द भक्त, वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित, जांगिड कुल गौरव श्री जगदीश प्रसाद जी शर्मा सेवानिवृत्त उपमुख्य वन संरक्षक, निवासी- भोपाल (म.प्र.) द्वारा रचयित पुस्तक '**विश्वकर्मा ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण**' चलभाष क्रमांक- ९४२५० २९९१८ पर सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा अवश्य पढ़ें। – धन्यवाद।

।। ओ३म।।

ऋषि मिशन

न्यास (रजि.)

(ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का अनुव्रती)

सम्पर्क सूत्र -
०१४५-२४२४४२१
नन्दकिशोर जांगिड (जांगिड कुलदीपक)
चलभाष : ९३१४३९४४२१
हेमन्त आर्य : ९८२८६५००९२

कार्यालय : १ जी १४, जे.पी. नगर, नाका मदार, अजमेर (राज.) ३०५००१

Email .: rishimission1875@gmail.com website:rishimission.com

ऋषि मिशन के कार्य एवं उद्देश्य

१. समाज गरीब, बेसहारा वर्ग के बुद्धिमान मेधावी तथा अनाथ बच्चों को शिक्षित करवाना।

२. ऋषि मिशन द्वारा ऐसे वंचित वर्ग को गुरुकुल पद्धति से अध्ययन कराकर आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन विधाओं में निपुण कर आत्मनिर्भर बनाना।

३. वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार।

४. गांव व तहसीलों में जाकर यज्ञ तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करना।

५. गोरक्षा एवं गोपालन हेतु आदर्श गौशाला स्थापना की भावी योजना तथा गोपालन हेतु प्रशिक्षण केन्द्र।

६. यज्ञ प्रशिक्षण हेतु शिविर तथा सोलह संस्कार हेतु शिविर का आयोजन करना।

७. स्वदेशी का प्रचार-प्रसार।

८. युवाओं हेतु नशा मुक्ति एवं संस्कार शिविर का आयोजन करना।

९. वेद कथा एवं उपनिषद् कथा का आयोजन करना।

१०. प्रेरणादायी तथा आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन करना।

११. दिनांक १ जनवरी २०१७ से ३ वर्ष से ९ वर्ष के बच्चों हेतु चरित्र निर्माण केन्द्र स्थापित किया जा रहा है।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर ऋषि मिशन को, आप सभी महानुभावों से इन कार्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु सहयोग की अपेक्षा है। इस पुनीत कार्य में तन,मन तथा धन से आपके सहयोग की जरूरत है।

ऋषि मिशन ट्रस्ट को सुदृढ़ करने हेतु हम आपके आभारी रहेंगे।

आठ दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम व सामवेद पारायण यज्ञ का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न

आठ दिवस तक **ग्राम बूढ़ा के आर्य समाज** द्वारा **वैदिक प्रचार एवं सत्संग** का सफल आयोजन संरक्षक के रूप में **पं. सत्येन्द्र जी आर्य** के मार्गदर्शन में किया गया।

गुरुकुल वेद शिक्षा पीठ सुल्तानपुर (उ.प्र.) के आचार्य **पं. शिवदत्त जी पाण्डे** द्वारा वेद एवं दर्शनों को सरल भाषा द्वारा इस प्रकार लोगों के सामने रखा गया कि जनता में वैदिक धर्म के प्रति एक लहर सी व्याप्त हो गई। बहुत ही अच्छी एवं सारगर्भित तरीके से **वेद कथा का पाठ** पूज्य आचार्य जी द्वारा किया गया।

सहारनपुर (उ.प्र.) से पधारी सुविख्यात भजनोपदेशिका **श्रीमती संगीता जी आर्या** ने अपने समधुर भजनों द्वारा सभी को लाभान्वित किया उनके साथ में पधारे उनके पति **श्री दीपक कुमार जी** के द्वारा भी अपनी मधुर वाणी द्वारा सहयोग दिया गया।

वेद प्रचार एवं सत्संग के साथ आदरणीय **श्री रामभजन जी आर्य (पाटीदार)** द्वारा अपने निज आवास पर **सामवेद पारायण यज्ञ** का सफल आयोजन किया गया। पिछले वर्ष श्री रामभजन जी के पुत्र श्री संजीव आर्य द्वारा चारों वेदों के पारायण यज्ञ कराने का संकल्प किया गया था। अगले वर्ष अथर्ववेद पारायण यज्ञ उनके द्वारा करवाया जावेगा।

उक्त वैदिक सत्संग की शुरुआत गांव दौरवाड़ा से की गई जहां अपार जन समुदाय ने भाग लिया। फिर दो दिन बूढ़ा के समीप ही **टकरावद में वेद प्रचार** कार्यक्रम के तहत विद्वानों द्वारा उपदेश व भजन प्रस्तुत किये गये। **दिनांक 17 से 20 दिसम्बर तक चले वेद पारायण यज्ञ व वैदिक सत्संग** में उपस्थित जनसमुदाय देखते ही बनता था। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता आर्य समाज बूढ़ा एवं उनके सभी सदस्यों की मेहनत व लगन का प्रतिफल है।

क़ार्यक्रम में वैदिक साहित्य के सहयोगकर्ता के रूप में **श्री नानालाल जी शर्मा,** निवासी देहरी ने **वैदिक संसार इन्दौर** की ओर से सक्रिय भूमिका निभाई। साथ ही **प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान देवास** द्वारा भी सहयोग प्रदान किया गया।

सभी स्थान पर आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रीय आर्य समाजों ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। **कार्यक्रम का सफल संचालन सरल व सौम्य व्यक्तित्व के धनी आर्य श्री रामभजन पाटीदार बूढ़ा द्वारा किया गया।** वेद प्रचार कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका **कमलेश जी आर्य** (अध्यक्ष आर्य शिक्षण समिति बूढ़ा) एवं **विनोद नागरिया** (उपप्रधान वेद प्रचार मण्डल मल्हारगढ़) की रही।

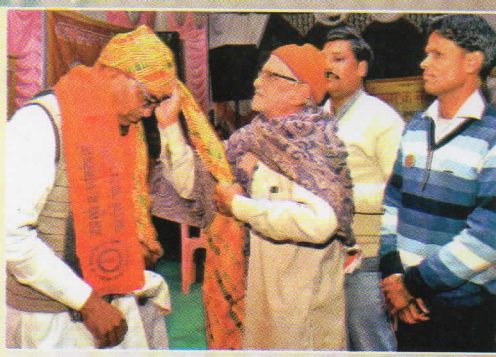

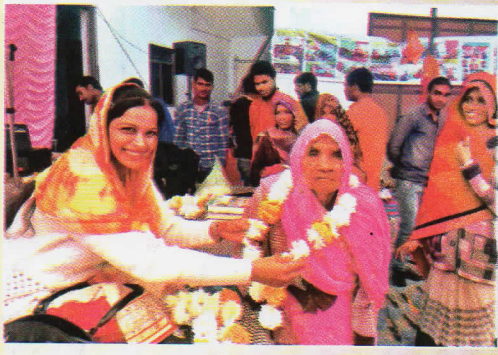

वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ पाणिग्रहण संस्कार

वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित, **ऋषि दयानन्द भक्त श्री दयानन्द जी शर्मा** (दक्षिण अफ्रीका वाले) निवासी-मोदी नगर जिला- गाजियाबाद (उ.प्र.) के अनुज **डॉ. श्रद्धानन्द जी शर्मा** सुपुत्र स्मृति शेष **श्री छीतरमल जी शर्मा की सुपुत्री सौ. का. प्रेरणा शर्मा का विवाह वैदिक विधि से चि. रुपेश सुपुत्र श्री रामस्वरूप जी राजोतिया, सुपुत्र स्मृति शेष श्री नाथूलाल जी राजोतिया** निवासी-जयपुर, मूल निवासी-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.) के संग दिनांक **८ दिसम्बर २०१६** को जयपुर में आर्य समाज के विद्वान **आचार्य दीपक जी शास्त्री** द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

इस मंगलमयी बेला पर वरिष्ठ समाजसेवी तथा उद्योगपति **श्री नेमीचन्द जी शर्मा**-गान्धीधाम, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण सभा के पूर्व महामन्त्री **श्री उमाशंकर जी पालड़िया-अजमेर, आर्य समाज वैशाली नगर जयपुर के प्रधान श्री मोतीलाल जी शर्मा, वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा** सहित परिवारजनों एवं गणमान्यजनों ने उपस्थित होकर वर-वधु को सुखमय जीवन हेतु शुभाशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर **वधु पक्ष की ओर से वैदिक संसार को ५१०० रुपए तथा वर पक्ष की ओर से ३१०० रुपये का सात्विक दान** दिया गया।

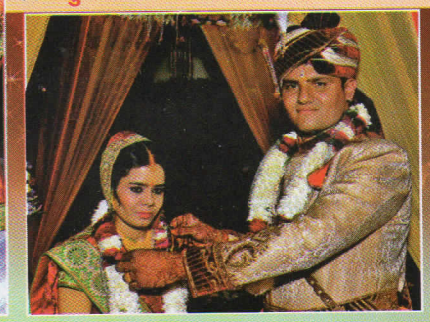

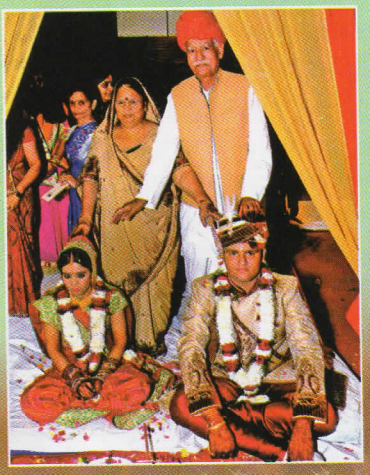

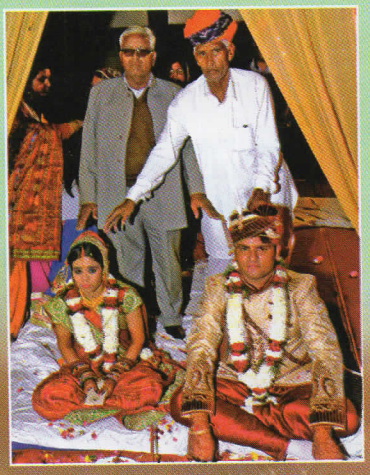

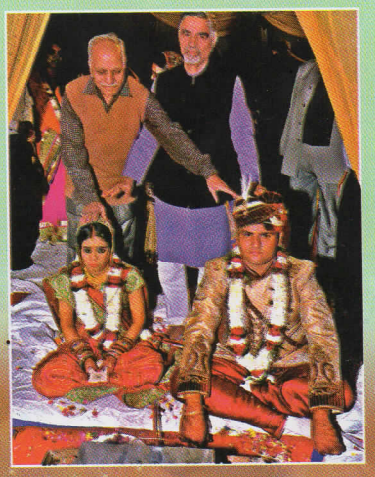

चि. अंकुर संग आयु.छाया परिणय दिनांक २६ नवम्बर २०१६

वर पक्ष- स्मृति शेष श्रीमती कस्तुरीदेवी धर्मपत्नी स्मृति शेष श्री हजारासिंह जी **(दादा-दादी)**
- श्रीमती शारदादेवी
- स्मृति शेष-श्री सुरेशचन्द्र वर्मा **(माता-पिता)**
- श्री अमित कुमार-श्रीमती प्रियंका आर्य **(भैया-भाभी)**
- श्री दिनेश- श्रीमती अनिता वर्मा **(फूफा-बुआ)**
- श्रीमती उषारानी- स्मृति शेष शशिकपूर वर्मा **(बुआ-फूफा)**
- श्री प्रशान्त-श्रीमती राखी वर्मा **(बहन-बहनोई)**
- राघव-वैदिक, देव-सिद्धार्थ **(भतीजे-भानजे)**

वधु पक्ष - **उत्तमकुमार मांगेराम नामदेव एंड ब्रादर्स बरखण्डी, शामली (उ.प्र.)**
- श्री मांगेराम नामदेव-श्रीमती विमलेशदेवी **(माता-पिता)**
- श्री रवि नामदेव-श्रीमती शिवानी नामदेव **(भैया-भाभी)**
- छवि सिंहवाल **(बहन)**
- अजय सिंहवाल, व्योम सिंहवाल **(भतीजे)**

वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी
अमित कुमार आर्य, मन्त्री आर्य समाज खेड़ा अफगान

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, सैविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - राजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

।। ओ३म् ।।

विषय	व्याख्याता	वीडियो	एम.पी.श्री
छान्दोग्योपनिषद्	आचार्य सत्यजित् जी		
ईशोपनिषद्	आचार्य सत्यजित् जी		
केनोपनिषद्	आचार्य सत्यजित् जी		
कठोपनिषद्	आचार्य सत्यजित् जी		
बृहदारण्यकोपनिषद्	आचार्य सत्यजित् जी		
वेदान्त दर्शन	आचार्य सत्यजित् जी		
योगदर्शन	आचार्य सत्यजित् जी		
योगदर्शन	स्वामी विष्वङ् जी		
न्यायदर्शन	आचार्य सत्यजित् जी		
वैशेषिक दर्शन	आचार्य सत्यजित् जी		
मीमांसा दर्शन	आचार्य सत्यजित् जी		
सत्यार्थ प्रकाश			
आत्मनिरीक्षण	आचार्य सत्यजित् जी		
आत्मनिरीक्षण	आचार्य ज्ञानेश्वर जी		
आत्मनिरीक्षण	आचार्य सोमदेव जी		
मूर्ति पूजा वेदविरुद्ध	आचार्य धर्मवीर जी		
यज्ञोपरांत प्रवचन	आचार्य धर्मवीर जी		
संधिविषय	आचार्य सत्यजित् जी		
मानव जीवन का लक्ष्य	आचार्य सत्यजित् जी		
ईश्वर विवेचन	आचार्य सत्यजित् जी		
जिज्ञासा समाधान	आचार्य सत्यजित् जी		
आयुर्वेद	आचार्य सत्यजित् जी		
आर्याभिविनय	आचार्य सत्यजित् जी		
योग साधना शिविर 2014			
योग साधना शिविर 2015			
योग साधना शिविर 2016			
मृत्यु सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
पुरुषाध्याय	आचार्य धर्मवीर जी		
वेद सबके लिए	आचार्य धर्मवीर जी		
वाक् सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
ईश्वर का वैदिक स्वरूप	आचार्य धर्मवीर जी		
अक्ष सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
ज्ञान सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
आपः सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
अग्नि सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
हिरण्यगर्भः सूक्त	आचार्य धर्मवीर जी		
शिवसंकल्प एवं मनोविज्ञान	आचार्य धर्मवीर जी		

।। ओ३म् ।।

ऋषि मिशन

न्यास (रजि.)

सम्पर्क सूत्र :
0145–2424421
9314394421
9828650092

(ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का अनुव्रती)

कार्यालय : 1 जी 14, जे पी नगर, नाका मदार, अजमेर (राज.) 305001

परिचय विवरण

दिनांक :– ....

नाम :– ....

पिता का नाम :– ....

पता :– ....

....

जिला :– .... राज्य :– .... पिन :– ....

मोबाईल/फोन नं. ....

ई–मेल :– .... पेन कार्ड नं. ....:....................

शिक्षा :– .... व्यवसाय :– .... पद :– ....

रुचि :– .... जन्म दिनांक :– ....

ऋषि मिशन से जुड़ने का उद्देश्य :– ....

....

प्रेरक का नाम :– ....

हस्ताक्षर

।। ओ३म् ।।

ऋषि मिशन

न्यास (रजि.)

सम्पर्क सूत्र :
0145–2424421
9314394421
9828650092

(ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का अनुव्रती)

कार्यालय : 1 जी 14, जे पी नगर, नाका मदार, अजमेर (राज.) ३०५००१

संकल्प-पत्र

श्रीमान्/श्रीमती .... ने ईश्वर की प्रेरणा से अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिये दिनांक .... को ....(गुरूकुल शिक्षा/गौ सेवा/अतिथि सेवा/यज्ञादि शुभकर्मों/वेदप्रचार आदि) के प्रयोजन के लिये अपनी पुण्य कमाई में से ..../– रुपये की राशि प्रतिवर्ष आजीवन/प्रतिमाह आजीवन .... ऋषि मिशन परिवार को प्रदान करने का संकल्प लिया है।

ऋषि मिशन परिवार इनके मंगलमय एवं आध्यात्मिक भावी जीवन हेतु एवं पारिवारिक सुख समृद्धि के लिये शुभकामनाएं प्रदान करता है, एतदर्थ इन्हें हार्दिक साधुवाद एवं आशीर्वाद।

परमेश्वर आपको सदा प्रसन्न रखे,

आप विश्व के जिस भी स्थान पर रहें, अपने परिजनों, मित्रों तथा

बन्धु बान्धवों सहित सुख समृद्धि एवं आरोग्यवान शरीर के साथ आनन्द को प्राप्त हों

आपका भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन सदा खुशहाल व समृद्ध रहे।

आपके जीवन में अभ्युदय एवं निश्रेयस् की सिद्धि हो।

हस्ताक्षर .... अध्यक्ष

।। ओ३म् ।।

ऋषि मिशन

न्यास (रजि.)

सम्पर्क सूत्र :
0145–2424421
9314394421
9828650092

(ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का अनुव्रती)

कार्यालय : 1 जी 14, जे पी नगर, नाका मदार, अजमेर (राज.) ३०५००१

Email : rishimission1875@gmail.com Website : www.rishimission.com

ऋषि मिशन के कार्य एवं उद्देश्य

1. समाज के गरीब, बेसहारा वर्ग के, बुद्धिमान, मेधावी तथा अनाथ बच्चों को शिक्षित करवाना।
2. ऋषि मिशन द्वारा ऐसे वंचित वर्ग को गुरुकुल पद्धति से अध्ययन कराकर आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन विधाओं में निपुण कर आत्मनिर्भर बनाना।
3. वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार।
4. गांव व तहसीलों में जाकर यज्ञ तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार हेतु कार्य करना।
5. गोरक्षा एवं गोपालन हेतु आदर्श गौशाला स्थापना की भावी योजना तथा गोपालन हेतु प्रशिक्षण केन्द्र।
6. यज्ञ प्रशिक्षण हेतु शिविर तथा सोलह संस्कार हेतु शिविर का आयोजन करना।
7. स्वदेशी का प्रचार प्रसार।
8. युवाओं हेतु नशा मुक्ति एवं संस्कार शिविर का आयोजन करना।
9. वेद कथा एवं उपनिषद् कथा का आयोजन करना।
10. प्रेरणादायी तथा आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन करना।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर ऋषि मिशन को, आप सभी महानुभावों से इन कार्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु सहयोग की अपेक्षा है। इस पुनीत कार्य में तन, मन तथा धन से आपके सहयोग के जरूरत है।

ऋषि मिशन ट्रस्ट को सुदृढ़ करने हेतु हम आपके आभारी रहेंगे।

ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती